International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

# वैश्विक परिवेश में श्रीमद्भागवत का धार्मिक मूल्य

**धीरज**
नेट, (जे.आर.एफ), हिन्दी
म.नं. 724 , सैक्टर–23, सोनीपत (हरि0)

**शोध आलेख सार–** वस्तुतः भगवत् गीता एक ऐसा लोकप्रिय ग्रन्थ है जो भारत के सभी वर्गों के लिए लिखा गया है। यह किसी काल व देश की सीमाओं से बंधा हुआ नहीं है। इसमें गीता रूप, रहस्यमय उपदेश, एक अनवरत रूप से चलने वाला जीवन दर्शन वास्तविक रूप में दर्शाया गया है। इसमें बार–बार भक्ति और ज्ञान का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। यह मनुष्य मात्र को इस बात के प्रति आश्वस्त करता है कि जीवन में चाहे कितनी भी बाधाऐं आऐं लेकिन ईश्वर भक्ति का कभी विनाश नहीं होता। प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्विक परिवेश के सन्दर्भ में श्रीमदभागवत् का धार्मिक मूल्य दर्शाया गया है।

**मूलशब्दः** प्राचीन धर्म, गीता का उपदेश, रहस्यमय उपदेश, भगवत् कृपा, ज्ञानयोग, कर्मयोग।

**भूमिका**: 'भगवद्गीता' एक दार्शनिक ग्रन्थ कम बल्कि एक प्राचीन धर्म ग्रन्थ अधिक है। यह कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जो विशेष रूप से दीक्षित लोगों के लिए लिखा गया हो और सभी जिसे केवल वे ही समझ सकते हैं। वरन् भगवद्गीता एक लोकप्रिय ग्रंथ है जो सभी वर्गों के लिए लिखा गया है। इस ग्रन्थ में सब सम्प्रदायों के उन साधकों की महत्कांक्षाओं को वाणी प्रदान की गई है जो परमात्मा के नगर की ओर आंतरिक मार्ग पर चलना चाहते हैं। शताब्दियों तक करोड़ों हिन्दुओं को इस महान ग्रन्थ से शान्ति प्राप्ति होती रही है। यह ग्रन्थ किसी एक हिन्दू धर्म के सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि सम्पूर्ण हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करता है। न केवल हिन्दु धर्म का, बल्कि जिसे धर्म कहा जाता है उस सबका, उसकी उस विश्वजनीयता के साथ प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें काल और देश की कोई सीमाऐं नहीं है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

गीता का उपदेश देने वाले कृष्ण को विष्णु के साथ, जो कि सूर्य का प्राचीन देवता है और नारायण के साथ जो ब्रह्माण्डीय स्वरूप वाला प्राचीन देवता है और देवताओं और मनुष्यों का लक्ष्य या विश्राम स्थान है, एकरूप कर दिया गया है।

कर्वति सर्व कृष्णः। जो सबको अपनी ओर खींचता या सबमें भक्ति जगाता है, वह कृष्ण है।

गीता में घोषित किया गया है, ''तुझे यह गीता रूप रहस्यमय उपदेश किसी भी काल में न तो तप रहित मनुष्य से कहना चाहिए, न भक्ति रहित से और न बिना सुनने वाले से ही कहना चाहिए तथा जो मुझे दोष दृष्टि रखता है, उससे तो कभी भी नहीं कहना चाहिए।[1]

भक्ति का लक्षण शाडिंल्य सूत्र में इस प्रकार है–

'सा परानुरक्तिरीश्वरे' – ईश्वर के प्रति पर' अर्थात निरतिश्प्य जो प्रेम है, वह भक्ति है।[2] गीता का भक्तियोग ज्ञान और कर्म से अनुप्रणित है। परा भक्ति पर ज्ञान और निष्काम कर्म वस्तुतः एक ही है क्योंकि तीनों का अर्थ है– निर्विकल्प अपरोक्ष आत्मानुभूति। भक्ति का सामान्य अर्थ भगवान का भजन, सेवा स्मरण है और यह भी भक्त और भगवान के द्वैत पर टिकी है, किन्तु परा भक्ति में अखण्ड ज्ञानानन्द रूप भगवत्स्वरूप में भक्त और भगवान एकाकार हो जाते हैं। लौकिक कर्म में कामना बनी रहती है।

भक्त भगवत्कृपा और भगवद्वचनों से आश्वस्त रहता है। गीता उपदेश में यह कथन बार–बार आया है कि भगवान ने बारम्बार इस प्रकार आश्वासन दिये हैं– 'मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता'[2] कल्याणकर्म करने वाला कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।[3] यदि कोई अत्यंत दुराचारी भी निश्चछल रूप से मेरा भजन करने लगे तो उसे साधु ही मानना चाहिए क्योंकि वह शीघ्र ही धर्मात्मा बन जाता है।[4]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

भक्ति का अर्थ उपासना किया जाता है। उपासना का अर्थ है भगवान का निरन्तर ध्यान, भगवान का तैल धारावत निरन्तर स्मरण। नाम जप से स्मरण पुष्ट होता है। निरन्तर स्मरण से भगवान प्रसन्न होकर अपने स्वरूप को प्रकाशित करते हैं। अखण्ड चिरानन्द की अपरोक्षानुभूति में भक्त का भगवान से एकीभाव हो जाता है।

गीता में बार–बार भक्ति और ज्ञान की एकता प्रतिपादित की गई है। गीता का अन्नय भक्ति पर बहुत आग्रह है। अन्नय भक्ति से ही भगवत्स्वरूप का ज्ञान और भगवत्प्राप्ति तथा भगवान से तादातम्य संभव है। ज्ञानी को भगवान ने अनन्य भक्त (एक भक्तिः) और आत्म–स्वरूप (आत्मैव) में बताया है।

'जो भक्त अनन्य भक्ति से मेरा निरन्तर चिंतन करते हुए मेरी उपासना करता है, उनकी भगवत्प्राप्ति (योग) और उसकी साधना (क्षेम) की मैं रक्षा करता हूँ।

जो भक्त अनन्य योग से मेरा ध्यान और उपासना करते हैं, मैं जन्म–मृत्यु स्वरूप संसार–सागर से उनका आदर करता हूँ।[6]

निर्गुण उपासना को गीता 'अधिक क्लेशयुक्त' और कठिन बताती है और सगुण उपासना का उपदेश देती है।[7] गीता का प्राप्ति या शराणागति पर अत्यंत बल है। सच्चे हृदय से भगवान की शरण लेने पर सब कुछ वे ही संभाल लेते हैं, साधना के द्वारा खुलते जाते हैं और अंत में भगवदनुग्रह से भगवत्वप्राप्ति हो जाती है।

गीता में भगवान ने अर्जुन को जो अंतिम परमगुह्य उपदेश दिया, वह है– 'हे अर्जुन! तु मुझमें निरंतर मन लगाए रह, मेरी अनन्य भक्ति कर, मुझे सर्वस्व अर्पण कर, मुझे ही प्रणाम कर, ऐसा करने से तू निश्चय ही मुझे प्राप्त करेगा, यह मेरी सत्य प्रतिज्ञा है, क्योंकि तू मुझे अत्यंत प्रिय है। तू सब धर्मों को (कर्मों को) त्याग कर मेरी अनन्य शरण में आ जा, मैं तुझे सारे पापों से मुक्त कर दूंगा, तू शोक मत कर।[8]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

गीता का उद्देश्य ज्ञानयोग और कर्मयोग से समन्वय लाकर यह बताना था कि ज्ञानयोग द्वारा आसक्ति बंधन से मुक्ति तथा कर्मयोग से उपलब्धि प्राप्त होती है क्योंकि अज्ञान ही सब प्रकार की आसक्ति का मूल कारण है। अज्ञान यथार्थ ज्ञान द्वारा दूर होता है। ईश्वर के बारे में यथार्थ ज्ञान के दो स्वरूप हैं– ब्रह्मा और ईश्वर (गीता का बल इस बात पर है कि हमें ईश्वर को सगुण मानकर व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए)।

गीता[9] में कहा गया है कि चार प्रकार के लोग ईश्वर को भेजते हैं– ज्ञिज्ञासु, आर्त, अर्थार्थी एवं ज्ञानी। इसमें अनन्य भाव से ईश्वर की भक्ति करने वाले और निष्काम बुद्धि से बर्तने वाले की बुद्धि विशेष है। ज्ञानी को ईश्वर अत्यंत प्रिय है और ईश्वर को ज्ञानी अत्यंत प्रिय है। नित्य युक्त और अनन्य भक्ति में रहने का अभ्यास ही यर्थाथ ज्ञान है। गीता में भक्ति माग को श्रेष्ठतम बताया गया है।

गीता यह आश्वासन देती है कि कितनी ही बाधाओं और कठिनाईयों के होने पर भी ईश्वर के भक्त का कभी नाश नहीं होता। गीता के भक्ति सिद्धान्त में दास्य भाव ही प्रधान है। भावुकता प्रेमभाव की अभिव्यक्ति नहीं है। भक्त को अपनी अंकिचनता का बोध है और वह विनम्रतापूर्वक भगवत् अनुग्रह की प्रार्थना करता है और कहता है कि हे भगवान्! आपका विराट आश्चर्यमय रूप देखकर मैं भयभीत हो उठा हूँ। कृप्या आप मुझे अपना देवरूप दिखाईये।

अदृष्टपूर्व दृष्तिोऽस्मि द्रृष्टवाभयेन च प्रव्यधितं मनो में।
तदैव में दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास।।[10]

श्रीमद्भागवत एक बहुमूल्य ग्रन्थ है जिसके प्रति असंख्य जनसमुदाय की श्रद्धा है। श्रीमद्भागवत के सुनने से, चितंन करने से, पाठ करने से, और इसका अध्ययन करने से निश्चित रूप से मन की इच्छाऐं पूरी होती हैं और भगवत्कृपा प्राप्त होती है। कलयुग में इसे कलपत्रू कहा गया है अर्थात् इस सांसारिक भवसागर से मुक्ति

दिलाने वाला कहा गया है। श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ के आयोजन प्रायः घरों, मन्दिरों में, सामाजिक स्थल में होते रहते हैं। यही भागवत की लोकप्रियता का प्रमाण है।

श्रीमद्भागवत में ज्ञान बिखरा पड़ा है। उस ज्ञान को समेटना विद्वान पाठकों के लिए बड़ा दुष्कर कार्य है।

श्रीमद्भागवत का उपदेश स्वयं विष्णु भगवान ने ब्रह्मा जी को सर्वप्रथम दिया था। यही वेद–शास्त्रों का सार है। इसका मुख्य प्रयोजन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति करना है। प्रतिपदा या पौणमासी को स्वर्ण के सिंहासन पर रखकर जो इस ग्रंथ का दान करता है, वह भगवत्प्राप्ति करता है।

प्रौष्ठपद्या पौर्णमास्यां हेमसिह समन्वितम्।
ददाति यो भागवतं स याति परमां गतिम्।[11]

हे ऋषियों, जिसका नाम लेने से ही सभी पापों का नाश है और दुःख समाप्त हो जाते हैं, मैं उस भगवान को प्रणाम करता हूँ–

नामसङ्कीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम्।
प्रणमों द्रुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम्।।[12]

श्रीमद्भागवतपुराण लोक जीवन में सबसे अधिक प्रचलित है। यह जन जीवन में व्याप्त लोक संस्कृति का प्राण है। वेद कल्पतरू है तो यह उस कल्पतरू का फल है जिसमें रस ही रस है। यह शुकदेव जी के मुख से निकलकर और भी अधिक सारवान् और मीठा हो गया है–

निगमकल्पतरोगीलतं फलं।
शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

पिबतभागवतं रसमालयं
मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः।[13]

श्रीमद्भागवत की महता इसी कारण से है कि इसमें भक्ति रस का आनन्द है। भागवत में मोक्ष की तुलना में भक्ति पर अधिक बल दिया गया है। भागवत् के चरणों में निष्काम और निरन्तर भक्ति होना ही मनुष्य जीवन का परम् लक्ष्य बताया गया है।

स वै पुसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे।
अहैतुक्यप्रतिहता ययाऽऽत्मा सम्प्रसीदति।।[14]

अर्थात् 'मनुष्यों का परम कर्त्तव्य वही है जिसमें भगवान विष्णु में अहैतुकी और निबार्ध रूप से निरंतर चलने वाली भक्ति उत्पन्न हो जाये।

श्रीमद्भागवत में साधना के अनेक प्रकारों को स्वीकार किया गया है। जैसे वेद और शास्त्रों का अध्ययन, यज्ञ, तप, ज्ञान, धर्माचरण आदि। परन्तु इन सब साधनों का साध्य एक ही है। ईश्वर जिसे कृष्ण या वासुदेव कहा गया है–

वसुदेव परा देवा वासुदेवपरा मूखाः।
वासुदेवपरा योगा वासुदेवपराः क्रियाः।।
वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः।
वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः।।[15]

श्रीमद्भागवत में यह भी कहा गया है कि जब भी धर्म की हानि होती है और अधर्म बढता है तब ही ईश्वर स्वयं सज्जनों की रक्षा के लिए दुर्जनों के विनाश के लिए उत्पन्न होते हैं–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युतथाणम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।[16]

श्रीकृष्ण के अवतार के विषय में भागवत पुराण में कहा गया है कि श्रीकृष्ण और कोई नहीं, निराकार और चैतन्य रूप आत्मा ही है। उनका मनुष्य रूप तो माया के कारण प्रकट हुए प्रकृति के गुणों के आरोप के कारण दिखाई दे रहा है–

एतद्रूपं भगवतो ह्यारूपस्य चिदात्मनः।
मायागुणैर्विरचिंत महदाभिरात्मनि।।[17]

श्रीमद्भागवत गीता में यही कहा गया है–

यद यदाचरतिश्रेष्ठस्तत देवेतरो जनः।
स यल्प्रमाणं कुरूते लोकस्तदनुवर्तते।।[18]

**सारांश–** अतः आज बदलते वैश्विक परिवेश में श्रीमद्भागवत का धार्मिक मूल्य शाश्वत महत्व का है और गीता एक बहुमान्य ग्रन्थ है, जिसके प्रति असंख्य जनसमुदाय की श्रद्धा व गहरी आस्था है। आज आवश्यकता इस बात की है कि श्रीमद्भागवत में बिखरे ज्ञान को संकलित किया जाये ताकि आम जनमानस तक इसका लाभ पहुंच सके।

## सन्दर्भ सूची–


| | | |
|---|---|---|
| 1 | गीता | 18.63 |
| 2 | शांडिल्य भक्ति सूत्र | 2 |
| 3 | गीता | 1–40 |
| 4 | गीता | 1–30, 31 |

| | | |
|---|---|---|
| 5 | गीता | 1—22 |
| 6 | गीता | 1.2—6, 8 |
| 7 | गीता | 12—5,6,8,9 |
| 8 | गीता | 12,65—66 |
| 9 | गीता | 7.16,17 |
| 10 | गीता | 11.45 |
| 11 | भागवत् | 12.13.13 |
| 12 | भागवत् | 12.13.23 |
| 13 | भागवत् | 1.1.3 |
| 14 | भागवत् | 1.2.6 |
| 15 | भागवत् | 1.2.28—29 |
| 16 | भगवद्गीता | 4.7—8 |
| 17 | भागवत् | 1.3.30 |
| 18 | गीता | 3.21 |